विख्यात कोडुङल्लूर, सांस्कृतिक समन्वय की जगह के रूप में विख्यात है। भारत में इस्लाम और इसाई धर्म के लोगों का आगमन इसी जगह में हुआ था। सूफी कवियों के सांस्कृतिक समन्वय के अध्ययन के बाद ऐसे ही सांस्कृतिक समन्वय की भूमि में अध्यापक के रूप में आने का मौका मिला।

डॉ.सी.जयशंकर बाबु जी के कहने के अनुसार पोंडीचेरी में होनेवाले अंतर राष्ट्रीय संगोष्ठी भाग लिया । वहाँ से हिन्दी के विख्यात लेखक डॉ.गंगाप्रसाद विमल जी, सूर्यबाला जी, गीताश्री जी, डॉ.मधुधवन,विख्यात कवि ईश्वर करुण,हिन्दी सिन्धी लेखिका देवी नांगरानी जी आदि से मिलने का मौका मिला। विमल जी और मधु धवनजी से हमारा परिचय बढ़ता गया। डॉ.सी जयशंकर बाबु जी के परिवार से आत्मीय रिश्ता बनाई ।

मधुधवन जी के परिचय से गोआ के राज्यपाल विख्यात हिन्दी लेखिका मृदुला सिन्हा ,पुदुचेरी के लेफ्टनेंट गवर्नर डॉ.किरणबेदी, डॉ.इकबाल सिंग आदि से बातचीत करने का मौका भी मिला। विश्व हिन्दी दिवस के दिन पर चेन्नै के हिन्दी साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित अंतर राष्ट्रीय संगोष्ठीयों में प्रपत्र प्रस्तुत करने का और विश्व के हिन्दी सेवियों से मिलने का मौका मिला। कार्यक्रम संपन्न होने के बाद रात देर तक मधुधवन जी बातें करती रहीं। माँ जैसा प्यार मधु जी से हमें मिली। तमिळनाट् के लोगों को हिन्दी के प्रति जितना लगाव है, यह समझने का मौका भी इस तरह मिला। चेन्नै के राजस्थान असोसिएशन, पंजाब असोसिएशन, बिहार असोसिएशन, दिल्ली असोसिएशन जैसे संस्थाओं के अधिकारीयों से बातचीत करने पर पता चला की दो तीन हिन्दी अखबार भी चेन्नई से छाप रहे है।

'भारतीय साहित्य में सिविल सैनिक संबंध' विषय पर आयोजित अंतर राष्ट्रीय संगोष्ठी के मुख्य वक्ता के रूप में आने की प्रार्थना हम गंगाप्रसाद विमल जी से की। हमारा निमंत्रण स्वीकार करते हुए आप आए और अपने सार गर्भित भाषण से हमें अनुग्रहीत भी किया। हमारे घर में आकर बेटा आशुतोष के साथ खेला और उसे 'अप्पूप्पन' बुलाने का निर्देश भी दिया। विमल जी संघ सरकार के विभिन्न समितियों में विशेषज्ञ के रूप में मेरा नाम भी दिया था। गंगाप्रसाद विमल जी ने सालों बाद अपनी पुस्तक 'हिन्दी की विश्व व्याप्ति' हमारे लिए समर्पित भी की।

महारष्ट्र के देशभक्त पाँडुरंग सदाशिव सने, जो सने गुरु जी नाम से विख्यात है, के द्वारा संस्थापित 'आंतर भारती' ट्रस्ट के अधिवेशन 2018 में केरल में चलाने का मौका मुझे मिला। 'आंतर भारती' ट्रस्ट भारत के विभिन्न संस्कृतियों के बीच एक सांस्कृतिक सेतु बनाने के लिए कर्मरत संस्था है। अंतर

भारती' के ट्रस्टी श्री सद्विजय आर्या जी के नेतृत्व में पूरे भारत से 'आंतर भारती' के लगभग 300 सदस्य कोडुङल्लूर में आये। कोडुङल्लूर के वैदिक मिशन फाउन्डेशन में हुए अधिवेशन में भारतीय संस्कृति के बारे में गहन चर्चाएँ भी हुईं। उसके बाद सांस्कृतिक तीर्थयात्रा भी थी। भारत को पहचानने का एक अलग तरीका।

कालीकट विश्वविद्यालय में पढ़ते वक्त जवाहर पुस्तकालय, मथुरा के कुञ्ज बिहारी पचौरी से परिचय प्राप्त हुआ। केरल में आते वक्त बिहारी जी हमारे घर में आते थे और बाद में बेटा गोविन्द पचौरी जी भी वह रिश्ता आगे बढ़ा रहे हैं।

हिन्दी सूफी काव्यों में समाज दर्शन', 'अनार अब भी फूलते हैं' (मलयालम् के प्रसिद्ध लेखक सी.वी.बालाकृष्णन की कहानियों का अनुवाद) सन 2012 के भाषा समन्वय वेदी की अभयदेव पुरस्कार इसी रचना को मिली, 'हिन्दी कथा साहित्य में नारी', 'हिन्दी सूफी काव्यों में पर्यावरण', 'भारतीय साहित्य में सिविल सैनिक सम्बन्ध', 'एक प्याला चाय' (बौद्ध कहानियाँ), 'साहित्य की आँखों से पर्यावरण की झलक', 'साहित्य के पर्यावरण विमर्श' आदि किताबें अब तक प्रकाशित हो चुकी हैं। कई हिन्दी पत्रिकाओं में आलेख प्रकाशित कर चुके है।

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा और कालीकट विश्वविद्यालय के शोध निदेशक के साथ- साथ स्कूल ऑफ़ डिस्टेंस एजुकेशन (कालीकट विश्वविद्यालय, कण्णूर विश्वविद्यालय, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा), एन्साइक्लोपेडिअक पब्लिकेशन, मिनिस्ट्री ऑफ़ कल्चर, केरल सरकार, भाषा समन्वय वेदी, विकल्प, रिसर्च फ़ोरम, कालिकट यूनिवर्सिटी आदि के विशेषज्ञ के रूप में काम कर रहा हूँ।

भाषा समन्वय वेदी, कालीकट के अकादमिक अचीवमेंट पुरस्कार (2008) और अभयदेव अनुवाद पुरस्कार(2012); हिन्दी सेवी सम्मान(2012), हिन्दी शिक्षण सम्मान(2017) (तमिलनाडु हिन्दी साहित्य अकादमी), निर्मला स्मृति साहित्यिक संपादन पुरास्कार(2018, हरियाना), एमर्जिंग लीडर इन ह्युमानीटीस एंड सोशियल सायन्स पुरस्कार (2019, चेन्नै), ग्लोबल टीचर एजुकेशन पुरस्कार (2020 मुंबई) आदि अपने गुरुजनों की कृपा से प्राप्त करने का मौका मिला। हिन्दी का विश्वव्यापी फैलाव भारतीय संस्कृति के प्रति विश्व मानव के अनुराग से जुड़ा हुआ है। हिन्दी भाषा के लिए समर्पित जीवन इस तरह आगे चल रहा है। जो बीज सालों पहले मेरे दिल और दिमाग पर बोया गया है, वह गुरुजनों की कृपा से धीरे धीरे बढ़ रहा है, अनंत विहायस की ओर भुजाएँ फैलाते हुए ....

ने दिया। कुछ दिनों के बाद पुस्तकालय के किताबों को विभिन्न विधाओं के अनुसार रखने के लिए पिल्ला सर को सहायता देने के कारण प्रत्येक पुस्तक कौनसी अल्मरा में कहाँ है, यह मुझे मालूम था।

शोध सामग्री जुटाने के लिए उत्तर भारत जाने का निर्णय किया। आरसु जी ने अपने लेटर पाड में शोधार्थी को सहायता करने के बारे में बताते हुए चिट्ठी दी।इलाहाबाद विश्वविद्यालय,केन्द्रीय विश्वविद्यालय हैदराबाद, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र विश्व विद्यालय ,जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय दिल्ली, ओस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद विश्व विद्यालय, इफ्लू, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद केंद्र के हिन्दी विद्वानों से मिलकर, पुस्तकालयों से शोध सामग्री इकट्ठा करके वापस आया।

काशी विश्वनाथ मन्दिर, तिल भंडारेश्वर मन्दिर, प्रयागराज जैसे धार्मिक और सौंस्कृतिक जगह से मिले ज्ञान के बारे बताने की क्षमता मुझमें नहीं है। बाद में हिन्दी लेखकों की रचनाएँ सिखाने के लिए यह भ्रमण अत्यंत सहायक सिद्ध हुआ। केरल के विश्वविद्यालयों में हिन्दी साहित्य के समकालीन विधाओं पर हो रहे शोधकार्य और तर्क -वितर्क के बारे में और पाठ्यक्रमों में नये लेखकों की रचनाएँ शामिल करने से हिन्दी प्रदेश के विद्वान् अत्यंत प्रभावित हुए है। हिन्दी प्रदेश के लोग अपनी भाषा 'हिन्दी'के लिए इतना कुछ करने में हिचकने से वे दुखी भी थे।

'आरसु जी का खत देखते ही हिन्दी साहित्य सम्मेलन,अलहाबाद में और हिन्दुस्तानी प्रचारिणी सभा, काशी में रहने की सुविधा दी गयी। हिन्दी साहित्य सम्मेलन एवं हिन्दुस्तानी प्रचारिणी सभा के प्रकाशन विभाग देखने का और पुस्तकालय से विशेष छूट से किताब खरीदने का मौका मिला। दोनों संस्थाओं के कर्मचारियों से संस्थाओं के बारे में ढेर सारी बातें सुनी। प्रेमचन्द, महादेवी वर्मा, निराला जैसे हिन्दी साहित्यकारों की रचनाओं में चर्चित कई घटनाएँ जीवन्त देखने पर मुझे लगा विकास तो हुआ है शहरों में, गाँव बिलकुल बदला नहीं। वही पगडण्डीयाँ, वही साहूकार, वही किसान हर कहीं मिलते रहे।

हिन्दी विभाग के प्रतिनिधि के रूप में मैसूरू के भारतीय भाषा संस्थान, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के चेन्नई, हैदराबाद केंद्र जैसे कई जगहों पर गये ।तीन महीनों तक हिन्दी विभाग में हीं सिखाने का मौका तत्कालीन अध्यक्षा डॉ.हैमावती अम्मा जी ने दिया। रामकुमार वर्मा की स्वर्ण जयंती के अवसर पर अखिल भारतीय स्तर पर प्रश्नोत्तरी से लेकर अनगिनत संगोष्ठियों के संचालन में सहयोग दिया ।

अरुणाचल प्रदेश के डेरा नतुंग सरकारी कोलेज में होनेवाले नवलेखक शिविर में भाग लेने का मौका मुझे, और सूर्यबोस को मिला। इतना दूर न जाना है, यह फैसला हमने किया। लेकिन, आरसु जी ने कहा जाना ही चाहिए। "मौका हमारा इंतज़ार नहीं करेंगे। जो मौका मिल रहा है उसका सदुपयोग करना ही चाहिए" - आरसू जी के ये शब्द अब भी मेरे कानों में गूँज रहे हैं। सूर्याबोस के पिता सुभाषचंद्र बोस जी भी हमारे साथ आने के लिए तैयार हुए।

रास्ते में गोरखपुर पहुँचने पर मैं ने गीताप्रेस के पुस्तकालय से ढेर सारे पुस्तकें खरीदीं। इसके बारे में सूचना आरसू जी ने ही दी थी। इटानगर में विख्यात लेखक प्रताप सहगल और पत्नी शशी सहगल विशेषज्ञ के रूप में आये थे। साथ ही अरुणाचल प्रदेश के स्थानीय साहित्यकार भी हमें दिशा निर्देश दिया। निशि जन जाती के प्रथम हिन्दी डॉक्टरेट हासिल करनेवाली जोरुम अतिया ताने से मिलने का और अरुणाचल विश्व विद्यालय के हिन्दी विभाग के छात्रों के नाटक देखने का मौका हमें मिला। अरुणाचल के गोत्र भाषाओं के बारे में वहाँ के बच्चे हमें बता दी।

परशुराम जी और जनार्दन जी की मदद से इटानगर के सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक जगहों से भ्रमण कर, विभिन्न जन जातियों की संस्कृति के बारे में, बौद्ध संस्कृति के बारे में, मिथुन के बारे में, इन्नर लाईन पेरमिट के बारे में नई जानकारी हासिल करके हम वापस आये और हमारा पहला यात्रा वृतान्त 'निळा तट से अरुणाचल की ओर' हिन्दी की प्रतिष्ठित पत्रिका 'मधुमती' में प्रकाशित किया गया।

2008 में सुर्याबोस मेरी जीवनसाथी बन गयी।शादी के बाद हम साबरमती आश्रम गये। महात्मा के कुटी में बैठकर सूत कातने के बाद हृदय कुंज, विनोबा मीरा कुटीर, प्रार्थना भूमि, नंदिनी अतिथि गृह, उद्योग मन्दिर आदि देख कर सूत की माला लेकर बाहर निकले। सुदूर केरल से महात्मा के आश्रम तक आने का मौका तो हमें हिन्दी भाषा ने ही दी। फिर हम सरदार वल्लभभाई पट्टेल राष्ट्रीय संग्रहालय की ओर गये। फिर हम पहुँच गये, 1920 में महात्मा द्वारा संस्थापित गुजरात विद्यापीठ। आज वह डीम्ड विश्वविद्यालय है। वहाँ से मिली जानकारी के अनुसार हम ट्राइबल म्युसियम की ओर गये। गुजरात के आदिवासी जीवन का सुंदर दृश्य वहाँ देखने को मिला।

9 जून 2009 में एम्.ई.एस अस्मावी कोलज कोटुङ्ङल्लूर के हिन्दी प्राध्यापक के रूप में मुझे नियुक्ति मिली। प्राचीन काल में मुसिरिस नाम से

मिली।इस तरह हिन्दी भाषा की हृदय भूमि में पहुँचने का मौका मिला। वहाँ कार्यक्रम में भाग लेकर संस्थान पर दो तीन दिन रहे। वहाँ के देशी-विदेशी छात्रों से संवाद करके हम कृष्ण जन्मभूमि मथुरा की ओर निकले । उसके बाद दिल्ली जाकर गणतंत्र दिवस का परेड देखा। वहाँ से ढेर सारी किताबें एकत्रित करके हम वापस आए।

स्नातकोत्तर उपाधि के लिए उस वक्त कम कॉलेजों में ही हिन्दी सिखा रही थी। आज भी हाल ऐसा ही है। कण्णूर जिला के मलबार आर्ट्स एंड साइन्स कॉलेज में हिन्दी स्नातकोत्तर उपाधि क्लास चला रही थी। आर्मी एजुकेशन कोर से सेवानिवृत्त श्रीधरन जी, एस.एन कोलेज के भूतपूर्व अध्यापक कृष्णन नम्पियार जी, राजेश जी जैसे अध्यापक हिन्दी भाषा के विभिन्न पक्षों के बारे में हमें समझा दिया। अपने अनुभव से वहाँ के अध्यापकों ने हमें हिन्दी भाषा के हीरे और मोती पहचानने का तरीका बता दिया। रेगुलर छात्रों को जो सुविधाएं मिलती हैं, वह प्राइवेट छात्रों को मिलता ही नहीं। दुख की बात यह है कि परीक्षा में अंक भी कम ही मिलते थे।

वहाँ पढ़ते वक्त ही मुझे सरकारी विद्यालय त्रिक्करिपुर के हिन्दी अध्यापक के रूप में दो महीने काम करने का मौका मिला। जिस विद्यालय में पढ़ा था ,वही सिखाने का मौका मिलना,कितना सुखदायक है। इसके बाद कण्णूर विश्वविद्यालय के मानन्तवाटी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान में बी.एड किया। हमारा अध्यापक मधुसूदन जी थे। बी.एड की उपाधि मिलने के बाद कल्पट्टा के एन.एम.एस.एस.सरकार कॉलेज में हिन्दी के अतिथि अध्यापक के रूप में काम मिला। एक साल वहाँ काम किया। दूसरे साल भी गए तो वहाँ के मलयाळम् अध्यापक रामनकुट्टी सर ने कहा- "इस तरह अतिथि अध्यापक के रूम में काम करते रहने से कोई फायदा नहीं है। तुम्हें आगे चलना ही चाहिए"। सच कहूँ तो, मुझे पता नहीं था आगे क्या करना है? सर ने ही मुझे बता दिया, फिर क्या करना है। सन 2002 में कालीकट विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में कॉलेज के शिक्षकों के लिए आरक्षित एम.फिल सीट दूसरे लोगों को देने का निर्णय किया। इस तरह मेरी ज़िन्दगी के स्वर्ण युग की शुरुआत हुई।

कालिकट विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डॉ.जी.गोपीनाथन जी थे। तीक्ष्ण दृष्टिवाला,कृशगात्र गोपीनाथन जी के साथ डॉ.एम्.एस विश्वम्भरन, डॉ.जे.हैमावती अम्मा, डॉ.चन्द्रिका, डॉ.आर.सुरेन्द्रन, डॉ.इकबाल अहमद, डॉ.ए.अच्युतन, डॉ.के. मोहम्मद, डॉ.फातिमा जीम जैसे विद्वान भी हिन्दी विभाग में कार्यरत थे।

नया वातावरण, नये लोग, नयी शिक्षण प्रणाली इन सब से ताल-मेल होने के लिए एक महीना लिया। अनुवाद में पी.जी डिप्लोमा करने का अवसर भी मिला। कोर्सवर्क के रूप में अनुवाद करना था और मुझे निदेशक के रूप में डॉ.जी.गोपीनाथन जी मिला। अनुवाद के विशाल दुनिया का चित्र आपने सिखाया। किस तरह अनुवाद करना है,कम से कम समय में सर ने बता दिया। डॉ.आर.सुरेन्द्रन जी (जिसे हम प्यार से आरसू जी पुकारते हैं) के अनुवाद क्लास में बैठने का एक शर्त था - न्यूस चैनल के दस वाक्यों का अंग्रेजी से हिन्दी और हिन्दी से अंग्रेजी में अनुवाद करके लाना है (भाषाई क्षमता बढ़ाने का और शब्दभंडार बढाने का सरल तरीका)। इस तरह विभिन्न नए-नए तरीकों से अनुवाद की विशाल दुनिया हिन्दी विभाग के प्रतिभावान अध्यापकों ने खोल दी ।

एम्.फिल क्लास शुरू होने के कुछ दिनों के बाद चन्द्रिका जी सेवानिवृत हो गयी। सेवानिवृत होने के दिन में मैं चन्द्रिका जी के पास गया और उन्हें एक कलम दे दी। टीचर की आँखों से आँसू आ रही थी और मुझे भाषा विज्ञान का एक किताब, जो सालों से टीचर सिखा रही थी,दे दी -विश्वविद्यालय से पहला तोहफा।

हिन्दी विभाग के वरिष्ठ आचार्य डॉ.के मुहम्मद जी के निदर्शन में लघु प्रबंध तैयार करने का सौभाग्य मुझे मिला। मुहम्मद जी ने ही 'सूफी कविता और भारतीय विचारधारा' नामक विषय बता दिया। हर दिन अपने आचार्य के साथ, भारतीय काव्य रूढ़ियों को अपनाते हुए विदेशी परम्परा की कथाओं को भी स्वदेशी वातावरण में प्रस्तुत करके,सूफी कवियों ने मध्ययुगीन संस्कृति के सामासिक स्वरुप को कैसे प्रस्तुत किया ? इसके बारे में चर्चाएँ हुई। इस्लाम के कई तत्व सर ने बता दिया और इस तरह शोध प्रबंध तैयार हुआ।

सूफी काव्यों के बारे में ही अध्ययन करने का निश्चय किया। क्योंकि आज की तनाव भरी दुनिया में सूफी साहित्य का अध्ययन जितना सुन्दर है,उतना उपादेय भी है। विश्व शांति का उपाय विश्व प्रेम में है और वह विश्व प्रेम दिव्य प्रेम का ही प्रतिरूप है। जिसकी छटा हमें प्रेममार्गी सूफियों की रचनाओं में विपुल रूप से मिलता भी है। शोध का विषय रहा "हिन्दी सूफी काव्यों में समाजदर्शन। इस अध्ययन में सूफी कवियों के समय को आधुनिक समय के साथ विश्लेषण करके उनके द्वारा निररूपित सामजिक दर्शन की समसामयिक समीचीनता पर विचार किया है।

हिन्दी विभाग के पुस्तकालय के सूफीधर्म संबंधित रचनाओं को एक अलमारी में रखने की अनुमति पुस्तकालय के अध्यक्ष विश्वनाथन पिल्ला सर

देखने का अवसर मिला। उसे मैं अपना सौभाग्य समझती हूँ कि ईश्वर ने मुझे यह सौभाग्य प्रदान किया। समावर्तन पत्रिका ने अपना 150 वां अंक अक्कित्तम विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया। उस अंक में समावर्तन अक्कित्तम और आरसू को जोड़ने की कड़ी के रूप में मैं ने कार्य किया। मेरे इस कार्य के लिए समावर्तन ने मुझे एक प्रशस्ति पत्र भी प्रदान किया। भाषा समन्वय वेदी का शोध प्रतिभा पुरस्कार भी मुझे 2020 में प्राप्त हुआ। पत्रिकाओं में जैसे समावर्तन 150 अंक, पूर्वापर-पत्रिका के मलयालम विशेषांक, शब्द विधान, ग्लोबल एजुकेशन सोसाइटी एंड डेवलपमेंट -आदि में लेख। 'प्रेमचंद आधुनिक वातायन से मलयालम भाषियों का मूल्यांकन', 'युग निर्माता गांधी साहित्य के आईने में', 'मलयालम साहित्य प्रतीक और प्रतिमान'- आदि पुस्तकों में लेख।

एक हिन्दी अध्यापिका और लेखिका बनने के पीछे जिन-जिन महान गुरुजनों के नेतृत्व शक्ति, धैर्यवान व्यक्तित्व ने हमें छात्रों को आगे बढ़ने में अहम भूमिका निभाई उनके चरणों में शत-शत नमन करती हूँ। विद्यालय एक उपवन है जहाँ बच्चे उसके फूल हैं उन फूलों को हम ऐसे शिक्षा से पोषण करते हैं कि आगे चलकर वह एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में एक सुंदर वृक्ष बन जाए यह कामना करते हैं। शिक्षक की भूमिका में डॉ.एस.राधाकृष्णन ने निम्नलिखित शब्दों पर जोर दिया है - समाज में शिक्षा का स्थान महत्वपूर्ण है वह पीढ़ी दर पीढ़ी बौद्धिक परंपराओं और तकनीकी कौशल के संचालन के लिए धुरी के रूप में कार्य करता है और सभ्यता की दीपक को जलाने में मदद करता है।

मोबाइल: 9349949069

हिन्दी के झरोखे से मेरी दुनिया

डॉ.रंजित.एम

हिन्दी भाषा के प्रति मेरी रुचि कैसे बढ़ी? इसके बारे में सोचने पर मुझे
ऐसा लगता है, इसका कारण तो मेरे पिताजी सी.एम्.माधवन जी थे। सेना में
होने के कारण पिताजी को हिन्दी के प्रति रुझान होना तो स्वाभाविक है।
बचपन में बबीना, मेरठ जैसे जगहों में जाने का धुँधला सा याद ही है, मुझे।
उसी वक्त कभी हिन्दी का बीज मेरे दिल और दिमाग में बोया गया होगा।

जब मैं त्रिक्करिप्पूर के सरकारी विद्यालय में पाँचवीं कक्षा में पढ़ रहा था,
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के हिन्दी क्लास हमारे स्कूल में शुरू हुई।
स्कूल के हिन्दी अध्यापक सुरेन्द्रन जी और नारायण नम्पूतिरी जी के कहने के
अनुसार माता जी ने मुझे उसमें दाखिला किया। उसी साल मैं ने प्री -
प्राथमिक परीक्षा लिखा और कुछ दिनों बाद पीला रंगवाला प्रमाणपत्र भी
मिला। उसमें तत्कालीन प्रधानमन्त्री राजीव गांधी जी का हस्ताक्षर था।

'हिन्दी' शब्द के विकास से लेकर प्रतिपल विकसित होती रही हिन्दी
भाषा और साहित्य की दुनिया हिन्दी प्रचार सभा के शैलजा जी और गीता
जी ने खोल दी। उनकी मदद से दसवीं कक्षा पास होने के पहले ही मुझे प्रवीण
का प्रमाणपत्र मिला।उसी वक्त दूरदर्शन में 'रामायण' और 'महाभारत' का
संप्रेषण शुरू हुआ। हिन्दी भाषा का प्रयोग कैसे करना है, इसकी जानकारी यों
मिलती रही।

प्री डिग्री पढ़ने के लिए पय्यन्नुर कॉलेज में प्रवेश मिला। वहाँ द्वितीय उप
भाषा के रूप में हिन्दी को ही अपनाया। स्नातक स्तर में गणित को मैं ने
अपनाया। द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी ही लिया। दूसरे साल में पढ़ते वक्त
मुझे सरकारी शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र रामवर्मपुरम, त्रिशूर में हिन्दी शिक्षक
प्रशिक्षण कोर्स में प्रवेश मिला। वहाँ उम्र में सबसे छोटा छात्र मैं ही था। हिन्दी
भाषा को सिखाने की तरीका अनुभवी अध्यापक राधाकृष्णन जी, कुञ्जुण्णी
नंपीडी जी और एन.करुणाकरन पिल्लै जी ने हमें सिखाया। हिन्दी शिक्षण की
शुरुआत केरल राज्य के सांस्कृतिक राजधानी के रूप में विख्यात त्रिश्शूर
जिला के कणिमंगलम के एस.एन बॉयस स्कूल से हुई।

केंद्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा में भाषण प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए
जानेवाले दो सहपाठियों के साथ आगरा जाने की अनुमति मुझे भी

15. डॉ.वी.कुमारन - हिन्दी की राह पर, मेरा कदम 176
16. डॉ.एम.एस.विनय चन्द्रन – हिन्दी में मेरे कदम-मेरी देन 179
17. डॉ.ओ.वासवन - सब कुछ आकस्मिक है 195
18. डॉ.षीना ईप्पन - हिन्दी की जादुई दुनिया 203
19. डॉ.बी.विजयकुमार - अनथकी सारस्वत-यात्रा की अनकही झलकियाँ 217
20. डॉ.के.सी.अजयकुमार - राष्ट्र के लिए - राष्ट्रभाषा के नाम 226
21. डॉ.श्रीलता विष्णु - अपने ही किस्से से.... 237
22. सफिया नरिमुक्किल - हिन्दी के पथ पर चलते-चलते 245
23. प्रसन्नकुमारी एन - मेरी हिन्दी की राहें 252
24. डॉ.पी.गीता - हिन्दी और मेरी अस्मिता की सहयात्रा : तलहटी से चोटी की ओर 261
25. डॉ.मंजु रामचन्द्रन - मेरा संग मेरा हमदम 266
26. डॉ.षीला गौरभि - यादों की बहार 271
27. बीना के नायर - मुसाफ़िर हूँ यारों.... 279
28. सजयकुमार पी एस - बर्फ से लहरों तक का मुसाफ़िर 288
29. डॉ.श्रीजा प्रमोद - हिन्दी दीप से जगमगाया मेरा जीवन 294
30. डॉ.रंजित.एम - हिन्दी के झरोखे से मेरी दुनिया 301
31. डॉ.अनीष सिप्रियक - हिन्दी मेरी शान और पहचान 308
32. ज्योत्स्ना.टी.के. - हिन्दी की गलियों से मेरा सफरनामा.. 315
33. डॉ.प्रिया.ए. - हिन्दी भाषा के प्राँगण में : मेरे अनुभव के साक्ष्य 329
34. डॉ.लेखा.एम. - चंद कदमों का अनुगमन करते हुए... 337
35. डॉ.सुप्रिया.पी.- हिन्दी से बनी पहचान 345
36. डॉ.सूर्याबोस - हिन्दी मेरी कश्ती 351
37. डॉ.शबाना हबीब - मेरी कामयाबी के पीछे हिन्दी ही है 357
38. राजेश.के. - अगर विश्वास है तो सब कुछ संभव 364
भाषा समन्वयवेदी – संक्षिप्त परिचय 381

भूमिका

नमस्कार।

केरल के हिन्दी प्रेमी 'भाषा समन्वय वेदी' नामक संस्था स्थापित कर हिन्दी और मलयालम के बीच सेतु स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं।

वस्तुतः केरलियों का हिन्दी प्रेम शताब्दियों पूर्व का है। महाराजा स्वाति तिरुनाल ने हिन्दी में छन्द लिखकर अपना राष्ट्रप्रेम प्रकट किया था। लेकिन एक व्यवस्थित प्रयास प्रारम्भ हुआ गाँधी जी के आह्वान से, जो उन्होंने हिन्दी साहित्य सम्मेलन के 1918 में सम्पन्न इन्दौर अधिवेशन के मंच से किया था। उन्होंने दक्षिण भारत में हिन्दी प्रचार की आवश्यकता अनुभव की और हिन्दी साहित्य सम्मेलन को निर्देशित किया कि दक्षिण में हिन्दी-प्रचार का कार्य प्रारम्भ करें।

गाँधी के आह्वान का परिणाम यह हुआ कि हिन्दी साहित्य सम्मेलन के तत्त्वावधान में तमिलनाडु की राजधानी मद्रास (अब चेन्नै) में सुप्रसिद्ध राष्ट्रसेविका, तत्कालीन होमरूल आन्दोलन की प्रचारिका श्रीमती एनीबेसेण्ट की अध्यक्षता में श्री सी पी रामास्वामी अय्यर द्वारा गोखले हाल में हिन्दी-प्रचार का कार्य प्रारम्भ हुआ। साथ ही मई 1918 में गाँधी जी के पुत्र श्री देवदास गाँधी ने मद्रास के जार्ज टाउन में हिन्दी-वर्ग शुरू किया। अगस्त 1918 में स्वामी सत्यदेव परिव्राजक दक्षिण भारत आये और हिन्दी साहित्य सम्मेलन का प्रचार कार्यालय मद्रास के जार्जटाउन में खुला। बिहार के श्री रामानन्द शर्मा सम्मेलन के तीसरे प्रचारक के रूप में मद्रास गये और उसी प्रचार कार्यालय में रहकर कार्य किया। प्रारम्भ में दक्षिण में प्रचार प्रसार कार्य हेतु प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए लोग सम्मेलन की शिक्षण संस्था 'हिन्दी विद्यापीठ, महेवा' (नैनी), प्रयागराज आते थे और यह क्रम 1918 में 1922 तक चला।

मद्रास का वही प्रचार कार्यालय दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास के रूप में एक विशाल वटवृक्ष बना। उस वटवृक्ष ने तमिलनाडु, कर्नाटक, आन्ध्रप्रदेश और केरल में अपनी चार शाखाएँ स्थापित कीं। बाद में केरल में अलग से केरल हिन्दी प्रचार सभा की भी स्थापना हुई, जो स्वतन्त्र संस्था के रूप में हिन्दी प्रचार में संलग्न है।

तब तक गाँधी जी का व्यक्तित्व इतना विशाल हो गया था कि उनके एक आह्वान पर लोग घर से निकल पड़ते थे। गाँधी जी इस देश को केवल भौतिक रूप से

हिन्दी में केरलीयों के कदम
Hindi Main Keraliyon ke Kadam

Essay Collection
Hindi

Chief Editor
Dr.Arsu
Editor
Dr.K.C.Ajayakumar

Published by

अमृतसागर प्रकाशन
Amritsagar Prakashan
Thiruvananthapuram 695006
Ph.9447944721
Email-amritsagar2020@yahoo.co.in

First Edition
September 2021

Printed at

Sujili Colour Printers
Chathannoor, Kollam 695072

Price Rs.400/-

ISBN : 978-81-952192-4-7

विषयसूची

भूमिका – विभूति मिश्र 7
आत्मानुभवों की खुशबू और खूबसूरती - डॉ.आरसु 10
प्रकाशकीय- डॉ.के.सी.अजयकुमार 13

भाग एक – श्रद्धांजलि खंड

राघवजी – जीवनरेखा 16
जागा हुआ है हिन्दुस्थान (कविता -हस्तलेख)- पी.राघवजी 18
1. स्व. राघवजी - प्रो.एन.सत्यवती 21
2. राघवजी : मेरी जान-पहचान में - वी.राघवन नायर 27
3. पिताजी की पावन स्मृति में - एन.कलावती 30
4. महान गुरु के स्मृति-पथ पर - वी.एम.आनन्दकुमार 32
5. मलयाळम लेख - एम.सुधीन्द्र कुमार 34
6. वर्धा से मिली वर्धित ऊर्जा की कविताएँ - डॉ.आरसु 36

भाग दो – आत्मकथ्य खण्ड

1. प्रो.हिल्डा जोसफ – ज़िन्दगी की बगिया में, जब हिन्दी की कली खिली 43
2. प्रो.के.एम.गोविन्दन नम्पीशन - निवेद गिलहरी का 49
3. अच्युतन वळिळक्कुन्न् - जीवन की गोधूलि में.... 66
4. डॉ.पी.बालकृष्णन - हिन्दी छात्रवृत्ति का वरदान 75
5. डॉ.वी.वी.विश्वम् - राष्ट्र-भाषा रग-रग में, मातृ-भाषा मग-मग में 90
6. के.जी.उण्णिकृष्णन - एक हिन्दी प्रेमी का जीवन 100
7. डॉ.आरसु - हिन्दी से मिली विशाल दृष्टि 108
8. डॉ.एम.के.प्रीता - हिन्दी की मेरी आधारशिला 118
9. डॉ.पी.के.चन्द्रन - कुछ सोच : पीछे मुड़कर 125
10. डॉ.पी.के.राधामणि - हिन्दी से जुड़ी प्रारंभिक यादें 127
11. डॉ. जे.उमाकुमारी - हिन्दी की राह पर 137
12. वेलायुधन पल्लिक्कल - मेरी हिन्दी शिक्षा 147
13. प्रो.एन.सत्यवती - हिन्दी से सार्थक बना जीवन 152
14. डॉ सी जे प्रसन्नकुमारी - सुनहली पंखोंवाली दुनिया 160

आज़ादी का अमृत महोत्सव

हिन्दी मैं केरलीयों के कदम

(भाषा समन्वय वेदी सदस्यों के आत्मकथ्य)

पी.राघवजी स्मृति ग्रंथ

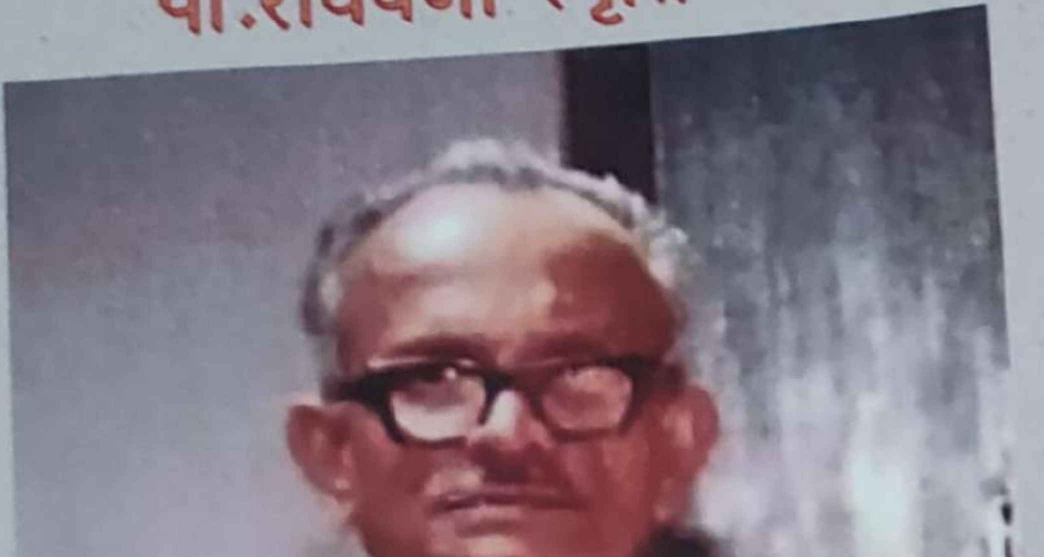

संपादक - डॉ.आरसु